!! १५ अगस्त !!

भारत माता के आँखों में आसु दिखायी देते है ,

१५ अगस्त है आज मगर मायूस दिखायी देते है !!

है ख़ुशी नहीं कि आज़ाद है माँ ,

है ख़ुशी नहीं कि सब पास है माँ !

क्या है जो इसको सता रहा ,

क्या है जो इसको रुला रहा ,

मैंने माँ से हसकर पूछा ,

तू इतनी उदास क्यों है माँ ?

माँ ने फिर सिसकिया भरी ,

सिसकिया भरते ही वो बोल पड़ी,

बेटी आज है १५ अगस्त ,

मैं हु आज़ाद है आज १५ अगस्त,

पर आज ही के दिन के लिए ,

मेरे लाल मुझे छोड़ गए होकर बेहाल,

कैसे भूलू मेरे उन लालो को,

कैसे भूलो मेरे उन दुलारो को,

जिन्होंने मेरी खुशियो के खातिर,

थी अपनी ही जान लुटाई ,

माँ कि होठो पर मुस्कान के लिए,

अपनी खून कि नदिया बहाई ,

आज मेरे उन लालो दुलारो को,

ये सब लोग भूल गए !

उनकी कुर्बानियो और निशानियो को ये सब भूल गए,

आजाद होकर भी कैद हु ,

व्यथाओं कि जंजीरो से जकड़ी हु,

पहले तो थे गोरे दुश्मन,

पर आज तो बने मेरे अपने ही दुश्मन,

केवल १५ अगस्त मानते है ,

एक दिन भारत माँ पुकारते है,

और फिर साल भर कोई पूछता नहीं,

मुझे याद कोई करता नहीं ,

मेरी छाती पर कितने पत्थर है पड़े,

मेरी आँखों के सपने बिखरे पड़े ,

सोने कि चिड़िया थी मैं कभी,

और उसका नामो निशान भी नहीं,

गरीबी भूखमरी बेरोजगारी भ्रष्टाचारी,

इन सबसे हु मैं जूझ रही ,

इ बेटी क्या बताओ तुझे अपना हॉल,

कितने दुखो को मैं झेल रही,

क्या फिर कोई भगत सिंह आएगा,

मेरी खुशियो के खातिर क्या,

वह अपने प्राण लुटायेगा ?

मैं आज भी वैसे कैद हु ,

जैसे मैं वर्षो पहले थी,

मेरे लाल मुझे छोड़ चले गए,

मेरे सच्चे सपूत कही खो गए,

क्या फिर वो मेरे लिए आयेंगे ,

मुझे फिर से आजाद कराएँगे ,

आज है १५ अगस्त केवल नाम का,

मेरे तिरंगे कि क़द्र नहीं,

केवल १५ अगस्त को लहराते है,

दूसरे ही दिन भूमि में लिप्त हो जाते है,

क्या फिर कोई तिरंगा लहरायेगा ,

क्या फिर कोई शान भढ़ाएगा ,

फिर भी है आज १५ अगस्त ,

मेरी चेतना है कही सोयी सोयी,

लेकिन फिर वही १५ अगस्त है आज,

मेरे प्यारे दुलारो का दिन है आज,

क्या करू बहुत मजबूर हु ,

क्या कहु बहुत विवश हु ,

फिर भी १५ अगस्त है आज,

केवल नाम का १५ अगस्त है !!